भगवत् कृपा
गुरुभक्ति यज्ञ 1937 - 1997
स्वामी नारायण
THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 20 अंक : 9	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चंदा : 50.00
शुक्रवार, 26.9.97	सितम्बर, 1997	प्रति अंक : 5.00

दीपावली शुभाशीष.............

स्वामिश्रीजी सत्य हैं

'अक्षरधाम' वॉकीगन
c/o दिनकरभाई पटेल
इलीनोस-यू.एस.ए.

गुणातीत द्विशताब्दी का सच्चा अपूर्व उत्सव मनायें–
हमारे जीवन में और सत्संग समाज में-1985 !

यह वर्ष तो सभी के जीवन में सुवर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा।
क्योंकि-मूलभूत वासना व स्वभाव या प्रकृति
जो कि करोड़ों साधनों या उपायों से भी नहीं टल पाती,
वह अतिशय बड़े सत्पुरुष की
मन, वचन और कर्म से अनुवृत्ति पालने से टल जाती है
और
जीव जीतेजी ही अक्षरधामरूप बन कर
भगवान का सुख प्राप्त करता है
व
अपने संबंध में आये उन सभी को खुले दिल से अर्पण भी करता है !
यह भी सूझ ना पड़े-समझ नहीं आए
यानि–
अनुवृत्ति समझ नहीं आये तो
अतिशय बड़े पुरुष-प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी जैसों का
केवल विशिष्ट प्रकार का अनुग्रह है–
सो खुले दिल से, नम्रभाव से, सरलता से प्रार्थना करते रहना,
जिससे सर्वोपरि सत्कर्म–
जिस किसी का चुभता हो-भावफेर होता ही है
वह बाधारूप नहीं हो
और
टल जाकर दिव्यभाव ही हो जाये
ऐसा महायज्ञ स्मृतियज्ञरूप से करना आ जाये
व
ऐसा बल सभी को मिले
एवं
जोड़ में काम करना आ जाए
ऐसी **दिव्यदृष्टि** और **दिव्यशक्ति** श्रीजी महाराज सभी को दें
और
उसके मुताबिक दो भिन्न अंग वाले (यानि-प्रकृति वाले)
तथा
समकक्षा के सरीखे-सरीखे मुक्तों के साथ रसबस
होना आ जाए–
यूं गुणातीत द्विशताब्दी मनाने का फल मिले–
यही अभ्यर्थना व नूतन वर्ष के शुभाशीष !

आपके ही दादुकाका के
हेतपूर्वक जय स्वामिनारायण !
वॉकीगन–27-8-'84

प्रेरणास्वरूप-आदर्श आत्मीय.... प.पू. दिनकरभाई!

पहली अक्तुबर यानि-गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज के मानसपुत्र एवं सरलता व विनम्रता के मूर्तस्वरूप प.पू. दिनकरभाई की जयंती का मंगलकारी दिन.....

अत्यधिक सौभाग्य से हम सभी को कई बार प.पू. दिनकरभाई के दर्शन, सेवा, समागम का अनुपम लाभ मिला है। अत्यंत सरल, शांत-प्रशांत व्यक्तित्व व अपने सादगीपूर्ण वर्तन एवं मिठासभरी वाणी से प्रथम दर्शन में सब को स्पर्श कर जाते हैं.... उनका वर्तन ही प.पू. काकाजी की महिमा व आध्यात्मिक मूल्यों का जीवंत प्रतीक है। गुणातीत स्वरुपों के प्रति स्वामीसेवकभाव के साथ उन स्वरुपों के संबंध वाले मुक्तों का अत्यधिक माहात्म्य उनका जीवन संगीत है....
प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के शब्दों में प.पू. दिनकरभाई यानि–
प्रेरणा स्वरुप-आदर्श आत्मीय.....

प.पू. गुरुजी ने उनकी जयंती निमित्त प्रार्थनारुपी एक पत्र लिखा है, जिसमें प.पू. दिनकरभाई के प्रति की उनकी अद्‌भुत प्रीति व महिमा का सम्यक् दर्शन हो रहा है..... आईये, हम सब भी उस 'पत्र' के एक-एक शब्द की गहराई पकड़ कर प.पू. काकाजी के अन्तर्गत रहस्य को समझने का प्रयास करें–जाग्रत बनें और प.पू. दिनकरभाई की सही अर्थ में जन्मजयंती मनायें.....

स्वामिश्रीजी

19.9.97

' हे! पू. दिनकरभाई.....

..... भजन में आपको जब-जब याद करता हूँ तब सहज ही प्रार्थना निकलती है कि–
आप जैसी स्वरुपलक्षी स्थिरता-धैर्य-समता-सरलता-विनम्रता-प्रशांत नीरवता
हे दिनकरभाई ! मुझ में भी प्रगटाना।

अभी-अभी मुझे आपकी जो बात खूब टच कर गई है वह यह कि–आप मेरे 51वें जन्म दिन निमित्त शिकागो से
नवम्बर के बाद फिर दोबारा फरवरी में सभी मुक्तों को लेकर देश पधारे !
'प.पू. काकाजी का सूर्य अभी भी आकाश में मध्याह्न की धूप व रोशनी लिये तप रहा है'।
इस तथ्य का यह स्पष्ट दर्शन करा गया !
मेरे जन्म दिन पर आप आए यह बात मेरे लिए महत्व की नहीं,
परन्तु, प.पू. काकाजी के प्रति भक्ति अदा करने की
आपकी लगन कैसी होगी उसका वह परिचय देती थी !
और, उसमें भी–
ज़रा-सा भी दिखावा या दंभ बिना की खरी स्थिरता-स्थितप्रज्ञता का ही दर्शन !
लेकिन, इन सभी गुणों से भी विशेष–
मुझे आपके प्रति का जो आकर्षण रहा है वह इस बात का कि-
प.पू. काकाजी के प्रबल चैतन्य प्रवाह को
आपने झेल कर उसे केवल आप तक ही सीमित न रख कर उसे लगातार आगे बहता रखा।
जिसमें–आपके संबंध में आते सभी भीग कर उस निष्ठा के बल से प्राप्ति की ऐसी निश्चिंतता महसूस कर रहे हैं।
और.....इस तथ्य की आज छोटे-बड़े सभी को प्रतीति भी हो रही है।
और जब.....प.पू. पप्पाजी जैसी चैतन्यदर्शी विभूति
आपको प.पू. काकाजी के स्वरुप के रूप में देखें–मान्य करें
तब आपके और प.पू. काकाजी द्वारा ग्रहण करी हुई प्रकृति की भिन्नता के भ्रम में उलझ कर
या
हमारे अहंतायुक्त मन के चक्करों में आकर
तर्क-वितर्क या शंका-आशंका में डूबे रह कर
आपके प्रति तनिक भी न्यूनता या विपरीतभाव पकड़ रखें तो–
प.पू. पप्पाजी की महिमा हम आडंबर से भले गाया करें परन्तु–
यह हमारा उनके प्रति का जबरदस्त मायिकभाव ही है ना?
और तब तो,
वच. लोया 10 में–
'ऐसे बड़े संत तथा भगवान जो बात कहते हैं वह वैसी ही है, लेकिन उसमें कोई संशय नहीं
यूं समझ कर भगवान तथा संत जैसे कहें वैसा करने लगें.....'
यह बात करके महाराज ने सुखी होने के लिए
जो एक रास्ता बताया उसमें ही खड्डा किया ना–रोड़ा डाला ना?
और.....
'मन का राज्य छोड़ कर सद्‌गुरुराज्य में एन्टर हो जाओ'–
यह प.पू. काकाजी की बात की भी हमने अवगणना करी ना?
तो,
आपकी जयंती के इस परम मांगलिक अवसर पर
हम सभी की एक ही अभीप्सा कि–
हे दिनकरभाई !
प.पू. काकाजी के ही शब्दों में
अब हम बौद्धिक भावना छोड़ कर भावात्मक बुद्धि को पकड़ कर–

ऐसी चैतन्य भूमिका में स्थित रह कर
सर्वत्र दिव्यता ही निहारें
और
आपकी तरह दिव्यता प्रसरा कर
प.पू.काकाजी को सिद्धान्तिक रूप से प्रसन्न कर लें।
यह माँग भी इसलिए ही है कि
प.पू. काकाजी कहा करते कि–
'अब तुम बापा का माल बेचने लग जाओ !'
प.पू. काकाजी का यह आग्रह ही रहता
यूं कहूँ तो भी गलत नहीं।
और
इसी हेतु उनके संबंध में आये हर एक को
प.पू. काकाजी ने दोनों हाथों से मुट्ठी भर-भर कर खूब दिया
और
उन्होंने जो दिया उसे कईयों ने संभाला–भोगा
और उसमें जीवन की धन्यता पाई !
परन्तु, जब आपको देखता हूँ–आपकी स्मृति करता हूँ तो लगता है कि–
उन्होंने जो **आध्यात्मिक संपत्ति** दी–उसे **बढ़ाया**
आप और पू. भरतभाई जैसी विभूतियों ने !

जो सच में मानता हूँ, वह दिल से लिखा है।
तो, दिनकरभाई !
हम सभी के लिए इस हेतु संकल्प करना-प्रार्थना करना।

हे बापू !
मेरी ओर से पू. दिनकरभाई का पूजन करके
यह सिफारिश उनके चरणों में रखोगे ना?
और तो क्या लिखूँ?
लेकिन,
महाराज, स्वामी और सभी गुणातीत स्वरूप
आने वाले कई वर्षों तक आपको तंदुरुस्त रखें
यही सभी की ओर से अन्तर की प्रार्थना के साथ
आपके सेवक
साधु मुकुंदजीवनदास तथा पू. भाईस्वामी के
प्रणामपूर्वक खूब-खूब जय स्वामिनारायण !'

✡✡✡✡✡

हर्षोल्लास की श्रृंखला–दशहरा..... शरद्पूर्णिमा.....

अनेक मंगल पर्वों का आनंद मनाने के पवित्र दिन नज़दीक आ रहे हैं.....गुणातीत स्वरूपों के पास दिल की सच्चाई से प्रार्थना करके बल, पवित्र बुद्धियोग व आशीर्वाद माँगने के दिन.....

✷ **दशहरा यानि**–प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन.....हमारे आंतरिक शत्रुओं, मन-बुद्धि के मूल्यांकनों, हठ-मान-ईर्ष्या के कारण भक्तों के प्रति की उपेक्षा, अभाव व अवगुण और उदासीनता के भावों, अपने ईष्टदेव के प्रति की प्रीति में आते ज्वार-भाटों व मनुष्यभाव-मायिकभाव के संकल्पों आदि पर सत्पुरुष का बल लेकर भजनरूपी शुद्ध शस्त्र से लड़ कर विजय पाने का दिन.....

✷ **शरद्पूर्णिमा यानि**–मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी का प्रागट्य दिन.....जिन्हें महाराज ने धरती पर साथ लाकर जीव का अनाथ होना सदा के लिए मिटा दिया। शरद्पूर्णिमा पर उनका प्रागट्य अपने आप यही संकेत देता है कि पूर्ण चंद्रमा की भाँति पूर्णता को पाना..... गुणातीत पुरुषों के साथ शुद्ध स्फटिक जैसा बिना दाग़ का पवित्र व निर्मल संबंध दृढ़ करना और इस बात का भी यह प्रतीक है कि जब तक सूरज-चांद रहेंगे तब तक गुणातीत परम्परा के वारिसदारों से यह धरती अखंड सुहागिन रहेगी.....

और.....शरद्पूर्णिमा के मंगलकारी दिन पर ही गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को भागवती दीक्षा दी ! गुणातीत पुरुषों की हर एक क्रिया सांकेतिक मर्म लिए हुए होती है। आज प.पू. स्वामिजी गुरुहरि योगीजी महाराज के नाम को पूर्ण चन्द्रमा की रोशनी की भांति ही उज्जवल करने सतत् परिश्रम कर रहे हैं.....

गुणातीत पीढ़ी के वारिसदारों के लिए गुरु गुणातीत अति समर्थ होते हुए भी स्वयं ही ऐसी साधुता से अत्यंत स्वामीसेवकभाव रख कर अजोड़ व आदर्श जीवन जीये कि आज भी उनके हर प्रसंग व उनकी रीति, नीति, स्थिति से निरन्तर प्रेरणा मिलती ही रहती है और.....'गुणातीत' परम्परा में आज के प्रगट स्वरुपों ने भी मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी, जागास्वामी, भगतजी महाराज, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री योगीजी महाराज, गुरुहरि प.पू. काकाजी की जीवन पद्धति के सामने निगाह रख कर, अखंड जाग्रत रह कर उनके वचन को अध्धर झेलकर परम एकांतिकी स्थिति प्राप्त की है.... अन्तर की प्रसन्नता प्राप्त की है। गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ सेवक के रूप में रहते हुए प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का निम्न प्रसंग खूब मननीय व मार्मिक है, जो बताता है कि–सच्चा गुरु अपने शिष्य को किस प्रकार

अनुपम सूझ देकर जीवनभर की अमूल्य पूंजी रूप आशीर्वाद बरसाता है और हम भी यदि इन बातों को पकड़ कर चलें तो आध्यात्मिकता की राह पर सफलता प्राप्त कर लेंगे... आज प.पू. स्वामिजी के रूप में वो साक्षात् दिखाई पड़ता है.... आईये, शरद्पूर्णिमा के महामंगलकारी अवसर पर इसी राह पर चलने हम कृतनिश्चयी बनें...

'एक बार युवक के रूप में प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी व सभी युवक अडवाळ होकर धंधुका के स्टेशन पर आए। पू. योगी बापा की फर्स्ट क्लास की टिकिट ली हुई थी। पू. बापा के साथ पाँच-सात सेवक वैसे भी अधिक थे ही, सामान भी ज्यादा था व टीन के ट्रंक थे।

वे सभी पू. बापा के पास ही खड़े थे और ट्रेन आ गई। मुश्किल से आधी मिनिट भी नहीं हुई थी कि पू. बापा एकदम गरम हो गए। 'ख्याल नहीं पड़ता? इतना सारा सामान चढ़वाना है....' यूं बोले और इतना अधिक गरम हो गए कि आँखें और चेहरा सब कुछ एकदम लाल-लाल सा हो गया।

सामान चढ़ गया, ट्रेन चल पड़ी और सब अमदावाद की ओर बढ़ रहे थे। रास्ते में प.पू. स्वामिजी विचार कर रहे थे कि जिन्दगी में कभी भी पू. बापा को इतने गरम होते नहीं देखा और ऐसी लाल आँखे भी पहले कभी नहीं देखी। आज क्यों इतने गरम हो गए होंगे?

यूं सोचते रहे और..... अमदावाद आया। वहाँ, प.पू. स्वामिजी ने पू. बापा का हाथ पकड़ा। उन्हें हुआ कि मुखारविंद कैसा है वह देख तो लूं! उन्होंने देखा तो पू. बापा खूब हँसे। मन ही मन प.पू. स्वामिजी सोच रहे थे कि ट्रेन में बैठ रहे थे तब तो गरम थे और अभी हँस रहे हैं!

दूसरे दिन सुबह बापा के पास पूजा में पहुँच गए। प.पू. स्वामिजी जा कर बैठे ही कि बापा बोले–'गुरु! बड़े पुरुष कभी गरम नहीं होते, लेकिन हम सेवा खूब कर रहे हों–खूब कर रहे हों... और इतनी सेवा करने पर भी यदि हमें फल ना मिलते देखें तो हमें सूझ देने के लिए गरम होते हैं'। वहीं प.पू. स्वामिजी ने तुरन्त ही प्रश्न पूछा–'लेकिन मुझे तो कल पता ही नहीं चला.... आप क्यों इतने गरम हो गये!' पू. बापा बोले–'गुरु! मैं गरम नहीं हुआ था'। फिर भी प.पू. स्वामिजी ने दोहराया–'पर आप क्यों गरम हो गए थे वह तो समझाओ...' तो पू. बापा बोले कि–'मैं बता तो रहा हूँ कि तुम्हारी सेवा मारी ना जाए, सो गरम हुआ था'।

फिर धीरे से अद्भुत सूक्ष्म भूल बताते हुए पू. बापा बोले–'जब तुम-सभी युवकों को लेकर सूटकेसों को गाड़ी में चढ़ा रहे थे, तब मैं तुम्हारे पर इसलिए गरम हुआ कि तब तुम शास्त्रीजी महाराज की स्मृति करना भूल गए थे'! प.पू. स्वामिजी ने कहा–'आपकी यह बात तो सही है। तब मैंने आपको याद नहीं किया था.... उस समय सेवा के भाव में ही बह गया था'।

वहां प.पू. स्वामिजी ने पू. बापा को पूछा–'यह तो बहुत मुश्किल है। इस जन्म में होगा क्या'? प.पू. स्वामिजी का प्रश्न सुन कर पू. बापा ने शांति से समझाते हुए कहा कि–

(1) किसी को कुछ कह दें, टोक दें, डाँट दें तो हमारी करी हुई सेवा चली जाती है।
(2) किसी के अभाव की बात सुन ली हो, किसी को ख्याल दे दिया हो तो करी हुई सेवा चली जाती है।
(3) किसी को हमारे अपने ढंग से वर्तवाने का आग्रह रखें तो करी हुई सेवा चली जाती है।
(4) भजन करते-करते सेवा नहीं करें तो करी हुई सेवा चली जाती है।

फिर हँसते-हँसते पू. बापा बोले–'गुरु! तीन बातों का ध्यान तुम रखना, भजन और स्मृति हम कराएंगे'।

प.पू. स्वामिजी बोले–'यह हुई सही बात! आसान से आसान बात! इसमें हम सुरुचि रखेंगे'। यूं कह कर प.पू. स्वामिजी ने पू. बापा को हाथ जोड़ कर दीनभाव से प्रार्थना करी तो पू. बापा ने अंतर की प्रसन्नता बताते हुए आशीर्वाद दिए–

'आज से निर्दोषबुद्धिरूपी सेवा हुआ करेगी। बड़े पुरुषों के क्रियायोगों को जँचाएंगे तो महाराज अक्षरधाम का बुद्धियोग दे देंगे। जिससे संबंध अखंड बने। जाओ आज से हमारा संबंध अखंड हो गया'।

यह प्रसंग हमें शायद मुश्किल लगेगा, लेकिन..... प.पू. स्वामिजी हम सभी को उनके जैसे ही प्रभु और पू. बापा की लाडली संतान बनाना चाहते हैं। हमें सच में सुखी करने के लिए ही गुणातीत पुरुष हमसे ऐसी कोई अद्भुत अपेक्षा रख रहे हैं। तो अब....

(1) भजन करते-करते सेवा करने की आदत डालें।
(2) जीवन के छोटे-बड़े क्रियायोगों में धीरे-धीरे भजन बढ़ाने की आदत डालें....
(3) सेवा करते-करते ग्राम्य बातें या दूसरी फिजूल की बातें तो करें ही नहीं।
(4) सेवा दौरान किसी से तनिक भी आग्रह या अपेक्षा नहीं रखें, किसी को कुछ ख्याल देने भी ना लग पड़े।

हमारा पुण्य निरंतर बढ़ता जाए, जमा ही होता जाए व किसी का भी पाप भूल से भी हमारे सिर पर ना लें। तो.... पू. बापा, प.पू. स्वामिजी पर कैसे प्रसन्न हो गए? वैसे प.पू. स्वामिजी भी हम पर प्रसन्न हो जाएंगे.....'

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

'श्रवण, मनन और निदिध्यासन'

- महाराज की सबसे बड़ी सेवा वो है कि हम उनकी मूर्ति के अखंड धारक बन जाएं। महाराज के रहने का ठिकाना बन जाएं। बाकी कितना ही कुछ करें..... कई केक बनायें.....कितने भी कार्ड बनायें लेकिन स्वामिनारायण-स्वामिनारायण जपते हुए करना सबसे अधिक है। भीतर में मूर्ति को पकड़ रखें। **बापा ने यह करने ही संस्था से हमें अलग किए....**
- निरोगी व्यक्ति की नींद–चार घंटे ! चार घंटे से अधिक हम जितना सोते हैं, उतने अधिक हम अपने शरीर में रोगों को इन्वाईट करते हैं और सच्चे योगी की नींद 36 मिनट.... भगवान् का स्वरुप तो अखंड जाग्रत !
- मानव समाज यानि–बुद्धि से चलता हुआ समाज,
  जानवर यानि–वृत्ति से चलता हुआ प्राणी
  महामानव का समाज यानि–बुद्धि से नहीं, बल्कि ब्राह्मीशक्ति से–प्रभु की प्रेरणा से चलता समाज।
  मानव में से महामानव का समाज–एक इवोल्यूशन है।
- जीव का स्वभाव है–सुखी होने का।
  मन का स्वभाव है–जीव को दुःखी करने का
  और
  संत का स्वभाव है–जीव को सुखी करने का
  अब अपनी अक्लमंदी है कि हमें किसके संग रहना है।
  यह बात करते हुए प.पू. गुरुजी ने फिर भजन की निम्न लाईनें गववाईं.....और पूरे महीने की कथा में अक्सर रोज़ गवाते।
  'रहे मन के साथ जो सड़ता रहता है वो,
  रहे मन के साथ जो उबलता रहता है वो,
  रहे मन के साथ जो डूबा रहता है वो,
  अधजली लकड़ी के जैसे सुलगता रहता है वो...'
- हम अपनी मेढ़क बुद्धि से भगवान के भव्य और दिव्य स्वरुपों की हर क्रिया की नापातोली करते रहते हैं कि इतना ठीक किया, इतना ठीक नहीं किया... इतना होना चाहिए.... ऐसा करना चाहिए या ऐसा क्यों किया.. अगर हम ऐसा सोचते हैं, तो-हमें उनमें भले मनुष्यभाव नहीं, पर सरासर मायिकभाव ही है।
- जब तक हम अपने स्वभाव से जुड़े रहेंगे तब तक मूर्तिधारक होने का प्रश्न ही नहीं उठता....
- मानव जीवन का अंतिम ध्येय यह है कि हम भगवान के अखंड धारक बन जाएं।
- हम साकार ब्रह्म के लड़के....प.पू. काकाजी के संबंध से हम ब्रह्मस्वरुप–क्योंकि हमें साकार ब्रह्म ने स्वीकार किया.... दूसरों के लिए तो ब्रह्मभाव–गुणातीतभाव को पाना संभव ही नहीं।
- दिल की सच्चाई से–अन्तर की गहराई से प्रार्थना करना कि–हे महाराज ! हे स्वामी ! मैं मन की जकड़ में–शिकंजे में आऊँ नहीं..... मेरा मन तो लुच्चा है पर आप बल दो... बल दो...
- अगर भीतर की सच्चाई से हम भक्तों की महिमा व गुण गायेंगे तो उनके गुण प्रभु से बख़्शिश में मिल जायेंगे।
- प.पू. बापा यानि– निर्दोषबुद्धि !
  प.पू. काकाजी यानि– मैत्रीभाव !
- हमें तो बस आनंद में रहा करना है.... हम जो भी हैं, कैसे भी हैं– पर हमें पू. काकाजी मिल गये ! इस बात का आनंद तो रहना ही चाहिए।
- साधु को या ऐसे स्वरुपों को हमें अपने वश में रखे रखना हो तो उसके आगे– पीछे घूमने से नहीं होगा। भक्तों के आगे– पीछे घूमेंगे, उनकी सेवा करते रहेंगे तो भगवान हमारे आगे-पीछे घूमते रहेंगे।
- जहां तेरा-मेरा होता हो। इधर-उधर की, यहाँ ऐसा है– वैसा है वगैरह..... अमहिमा की बात होती हो वहां भगवान एक पल भी ठहरते नहीं।
- हम भले तीर्थ स्थानों में घूमने वगैरह जायें, पर सारे तीर्थ ऐसे संत के चरणों में ही हैं।
- गुरुमुखी–गुरु को ही आगे रख कर, गुरु की ही स्मृति में, गुरु को याद करके 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' करके कोई भी निर्णय लेना।
- कई चीज़ें कई बार हमारी कोशिश करने के बावजूद भी सेट नहीं हो पाती हो तब भजन करें, परन्तु उसके कारण
  - माथूस नहीं होना,
  - एक्साईट नहीं होना,
  - रो नहीं पड़ना,
  - उदास नहीं हो जाना,
  - लाचारी महसूस नहीं करना,
  - किसी से भिड़ नहीं पड़ना,

  अगर यूं करते हैं तो इसका अर्थ यही कि हम प्रभु का कर्ता-हर्तापन भूल गये.....

✷ आध्यात्मिक राह के पथिकों के लिए कई चाबियाँ प.पू. काकाजी ने दी; पर हमें अपने मनमाने ढंग से वर्तना था, सो वो चाबियाँ हमने लगाई ही नहीं.....जैसे कि– 'अकेले कभी कोई निर्णय नहीं लेना, दो मिलकर ही लेना'।

यह चाबी है–

इससे एक तो बापा राजी होंगे,

दूसरा हम अपने स्वभाव में कभी खींचे नहीं जायेंगे,

तीसरा आपसी सुहृद्भाव बढ़ेगा

और

चौथा व्यावहारिक रूप से भी हम कोई गल्ती नहीं खायेंगे।

✷ हर प्रसंग पर निर्मानीभाव से अंतर्दृष्टि करनी यानि– अपना दोष देखना....अपनी कसर मानना और अगर कुछ समझ में ना आये तो भीतर में काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी की मूर्ति को देखना।

महाराज ने वचनामृत में अंतर्दृष्टि की व्याख्या यह भी करी है कि अन्दर और बाहर भगवान की मूर्ति को देखा करना। यूं अंतर्दृष्टि की प्रार्थना करा करनी कि–हे महाराज ! मेरा मन शांत कर दो। तो भीतर में बैठे स्वरूप जवाब देंगे.....किसी में से बोल जायेंगे या तो भीतर में सूझ पड़ जायेगी।

✷ वच. अत्यं. 25 वचनामृत में भक्त राजबाई ने प्रश्न पूछा कि–'हे ! महाराज आप कैसे राजी हों और किस बात से नाराज़ होते हैं'? इस प्रश्न का प्रत्युत्तर–

1. किसी एक ही बात को बार-बार चिकना कर करके पूछना–वो महाराज को नहीं जँचता।
2. हम ऐसी अपेक्षा रखते हैं कि सत्पुरुष हमें विशेष गिने–वो महाराज को नहीं जँचता।
3. 'आप औरों को तो कहते हो पर मुझे ही नहीं कहते'– ऐसी शिकायत जो करे–वो महाराज को नहीं जंचता।
4. अपने ईष्टदेव को अत्यधिक तीखे ताने मारकर जो बातें करे–वो महाराज को नहीं जँचता।
5. भगवन् किसी से बात करते हों और हम पूछे बिना बीच-बीच में बोले तो वो महाराज को नहीं जंचता-
6. भगवान का ध्यान करना, भजन करना, धर्म-नियम पालना, भक्ति आदि शुभ क्रियाएँ करने के लिए भी हम यूं सोचें कि हमसे तो होता नहीं–भगवान करायेंगे तो कर लेंगे–वो महाराज को नहीं जँचता।
7. साथ ही–स्वयं के बल से करने की कोशिश करे–भगवान के बल से कोशिश नहीं करे, सुरुचि ना रखे–वो महाराज को नहीं जँचता और जिसे बोलने की कोई तमीज़ ना हो वह महाराज को बिल्कुल नहीं जँचता।
8. हमें व्यावहारिक काम करने में लाज-शरम नहीं आती– आलस नहीं आता, बल्कि उतावलापन रहता है। पर, सत्संग–धर्म–भजन–कथावार्ता आदि कार्य करने में शरम आती है–वह महाराज को नहीं जँचता।
9. मैं यह करूँगा.....मैं ऐसा करूँगा–अपनी प्रकृति में रहकर अहं का प्रदर्शन करता रहे, अपनी प्रकृति में बहकर विवेक चूक कर हंसना-बोलना, उठना, बैठना जो करता रहे–वो महाराज को नहीं जँचता।
10. त्याग का, भक्ति का या तो किसी भी प्रकार के अहंकार का अपने बोलने में यदि प्रदर्शन होता हो तो–वो महाराज को नहीं जँचता।
11. महाराज को मर्यादा–विवेक खूब पसंद.....जो मर्यादा व विवेक नहीं रखता–वो महाराज को नहीं जँचता।
12. यदि कोई एकचित्त से दर्शन ना करे और आते-जाते व्यक्तियों, पशु-पक्षी वगैरह को देखने में नज़र घूमाता रहे-वो महाराज को नहीं जँचता।
13. हरिभक्त आपस में एक-दूसरे से बरोबरीभाव– सरीखापन रखें और आपसी महिमा ना समझें–वो महाराज को नहीं जँचता।

✷ अहं में रहकर करी हुई सेवा–भक्ति महाराज तक पहुँचती ही नहीं। बीच में ही मान का देवता खा जाता है। फिर उस सेवा का क्या फायदा? सच्चा साधु हम से सेवा लेकर तख्ती नहीं लगवाएगा, बल्कि भजन करके हमारा श्रेय करेगा।

✷ हमारी ईगो को छेड़ना–वही संत का काम है।

✷ यह सत्संग एक दर्पण है, जिसमें हम जैसे हो वैसे ही दिखाई पड़ेंगे.....गुणातीत भाव में अखंड स्थित संत की सेरे छाया में ही यह संभव है.....दूसरी कथावार्ता अच्छी जरूर लगेगी, पर वह हमारे भीतर की गंद का दर्शन नहीं करा पायेगी व ऐन मौके पर वे शब्द सामने आकर हमें गलत करने से रोकेंगे नहीं.....

✷ साधु की 98% एनर्जी सामान्य व्यवहार सिखाने में ही चली जाती है।

✷ खुले तो एक के पास ही रहना चाहिये–हर एक के पास कहते नहीं फिरना..... *(क्रमशः)*

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

स्वामी की बातें

(पिछले महीने की यानि–अगस्त के अंक में स्वामी की बात प्र- 5:415 में एक लाईन छूट गई थी, सो वह सुधार कर पूरी बात दोबारा इस अंक में दे रहे हैं।)

✡ पंचाला के वचनामृत में कहा है कि जैसे-जैसे भगवान का संबंध दृढ़ होता है वैसे सुख होता है। पर, भगवान परोक्ष हो जायें तब कैसे संबंध रहे? तब उत्तर दिया कि–कथा, कीर्तन, वार्ता, भजन और ध्यान–इससे संबंध रखा कहा जाता है और इससे भी अधिक–बड़े संत का संग वह तो साक्षात् भगवान का संबंध कहा जाये और भगवान का ही सुख आए; क्योंकि उसमें भगवान सभी प्रकार से रहे हैं और प्रत्यक्ष थे, तब भी जैसे हैं वैसे नहीं पहचाने गये, तो वह संबंध नहीं कहा जाये व इस प्रकार (तत्व से) पहचाने बिना तो प्रत्यक्ष हो तो भी क्या? ठीक वैसे ही, जिस संत में भगवान सभी प्रकार से रहे हैं उसे पहचाने तो आज **प्रत्यक्ष हैं और यूं ना पहचाने तो आज भी** परोक्ष हैं। तब एक साधु ने पूछा कि–क्या मूर्तियाँ प्रत्यक्ष नहीं? तब स्वामी बोले कि–प्रत्यक्ष भगवान व संत के चरित्र में मनुष्यभाव आए तो जीव अमावस के चन्द्रमा की भांति घट जाता है और दिव्यभाव रखे तो दूज के चन्द्रमा की भांति बढ़ता जाता है। मूर्तियाँ क्या चरित्र करेंगी जिससे कि अवगुण आए और घटता जाए? सो बोलते-चलते जो भगवान–वही प्रत्यक्ष कहे जाएं। बड़े संत जो हैं वे ही मूर्तियों में ऐश्वर्य रखते हैं। लेकिन मूर्तियाँ, शास्त्र और तीर्थ–ये तीनों मिलकर एक साधु नहीं बना पायेंगे। यूं बड़े संत हों वे मूर्तियाँ, शास्त्र व तीर्थ इन तीनों का निर्माण करें। सो, जिसमें भगवान सभी प्रकार से रहे हों, ऐसे जो संत हैं उन्हीं के द्वारा ही भगवान प्रत्यक्ष हैं।

प्र-5,415

579. हम छोटे थे तब मार्गी के साधु के एक महंत सभा लेकर बैठे थे....वहां जाकर उसे प्रश्न किया कि कार्य क्या और कारण क्या? तब वह बोला कि–हमें इस बारे समझ नहीं है। फिर हमें बोला कि तुम ही उत्तर दो। तब मैंने कहा कि भगवान कारण हैं और ये सारी सृष्टि–वह (उनका) कार्य है। (सुन कर) सभी भौंचक्के हो गए। प्र-6, 2

580. बाजरा इकट्ठा करके भगवान भज लेने; दूसरी कलाकारी-दिखावा करने से पार नहीं पड़ेगा। रुपये तो हमारे मरने पर यहीं पड़े रहेंगे। वे कुछ विशेष काम के नहीं। जितनी जरूरत हो उतना इकट्ठा करके (भगवान का) भजन कर लेना। ज्यादा होंगे तो फैल-फितूर में चले जाएंगे व उसकी वासना घर कर जाएगी।

प्र-6, 3

581. ये नियम जो हैं वह बहुत बड़ी बात है और जब धर्म में फर्क पड़ेगा तब तो कोई बात बनेगी नहीं। सो, सावधान होकर नियम पालने। इस संदर्भ में बहुत बातें करी।

प्र-6, 4

582. एक हरिभक्त से–'संतजन सोई सदा मोय भावे.....' यह कीर्तन गवाकर कहा कि इस कीर्तन में चार वेद, षट्शास्त्र और अट्ठारह पुराण आ जाते हैं, ऐसा चमत्कारी है। प्र-6, 5

583. पदार्थ ज्यादा इकट्ठे नहीं करना, वर्ना काफी परेशानी होगी व वासना रह जायेगी। देह के सुख के लिए पदार्थ हैं, परन्तु देह को तो दुश्मन ही कहा है। वह, भजन नहीं करने देती, अध्ययन नहीं करने देती, ऐसी है। सो, देहाभिमान छोड़ने पर ही सब दोष टलते हैं–यूं बात करके इस अनुसंधान में वचनामृत पढ़वा कर कहा कि मुक्तानंदस्वामी जैसा हो वह भी पदार्थ का संग होने पर कनिष्ट मुक्त की कक्षा में भी रहे या ना रहे यह शंका है.....

प्र-6, 9

584. और कहा–हमें दोष ना देना। हम तो कहा करते हैं क्योंकि उम्र हुई और अब अधिक रह तो पायेंगे नहीं। सो, कहते हैं कि समझदारी से शुद्ध वर्तन रखना, वर्ना खूब फर्क पड़ जायेगा–खोट रह जायेगी। अभी यदि दस्त, तेज बुखार या ऐसी बीमारी हो जाये तो सारी रात जागेंगे। लेकिन यूं एक पल भी ध्यान में नहीं बैठा जाये व सारी रात सोते रहेंगे। सो, देह ही दुश्मन है। वह अपने मतलब का करवाती रहती है–विष्ठा तक धुलवाती है। पर ध्यान-भजन करने नहीं देती, ऐसी है।

प्र-6,10

585. ब्रह्मचारी के यहां बातें करी कि जो विषय से बंधा हुआ है-वह बुद्ध है और उससे जो छूटा वह मुक्त है। सो, (उससे) छुटकारा पा लेना और देखो–यहां तो विषय का जोग नहीं है, सो ठीक रहा जाता है। परन्तु यदि बर्फी के टोकरे रोज़ आएं तो खाए बिना रहा नहीं जाए–ऐसा जीव का स्वभाव है। सो, वह तो ना आएं उसी में भलाई है।

प्र-6, 11

✡✡✡✡✡

निमन्त्रण

1 नवम्बर '97, शनिवार की सुबह ठीक 11.45 बजे

हर साल की तरह –

'अनिर्देश' में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज

व

सभी गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों को

वार्षिक महाभोग लगाकर

अन्नकूट आरती का मंगल प्रारम्भ होगा.....

इस मंगलमय अवसर पर

सपरिवार ईष्ट मित्रमण्डली सहित उपस्थित रहने का

आपको हार्दिक निमंत्रण है।

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.11.10.97	शनिवार	–	दशहरा
				प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन
(2)	दि.12.10.97	रविवार	–	एकादशी, व्रत
(3)	दि.16.10.97	गुरुवार	–	शरद्पूर्णिमा
				मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन
				प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन
(4)	दि.26.10.97	रविवार	–	एकादशी, व्रत
(5)	दि.28.10.97	मंगलवार	–	धनतेरस
(6)	दि.30.10.97	गुरुवार	–	दीपावली, लक्ष्मी-शारदा पूजन
(7)	दि. 1.11.97	शनिवार	–	अन्नकूटोत्सव, नूतन वर्ष प्रारंभ
(8)	दि. 2.11.97	रविवार	–	भैयादूज
(9)	दि. 5.11.97	बुधवार	–	लाभपंचमी
(10)	दि.11.11.97	मंगलवार	–	प्रबोधिनी एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III,
Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Bharat Pakaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064

TO,